ब्रिस्बेन टेस्ट : दूसरा भाग

सीरिज़ हारी पर दिल जीता

दिगम्बर व्यास

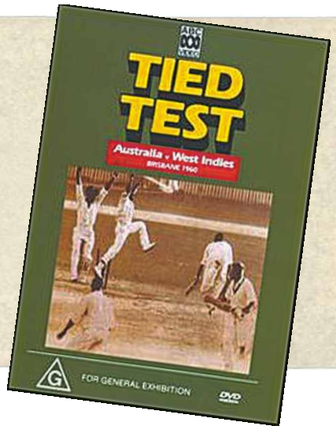

(इस लेख का पहला भाग चकमक के फरवरी माह के अंक में छपा था।)

ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज़ के बीच हुए शायद सबसे महान मैच को देखने के लिए केवल दो हज़ार दर्शक ही स्टेडियम पहुँचे थे। इस मैच का नतीजा भले ही टाई रहा लेकिन इसने ऑस्ट्रेलियाई लोगों के दिलों में भारी बदलाव ला दिया। एक सामान्य ऑस्ट्रेलियाई अब तक वेस्टइंडीज़ टीम को केवल काली चमड़ी वालों की टीम के रूप में जानता था। अचानक वह टीम श्रेष्ठ लोगों की टीम बन गई थी। अब तक उनके लिए नीग्रो का मतलब था गुलामों के वंशज। लेकिन वेस्टइंडियन का शिक्षित, संवेदनशील और खेल भावना से भरा बर्ताव अब उनके सामने था। लोगों के दिलों में इस बदलाव को देखकर वॉरेल ने अपने साथियों को प्रेरित किया कि वे ऑस्ट्रेलियाई लोगों के साथ ज़्यादा से ज़्यादा घुलें-मिलें। तनाव कम करने और श्वेत व अश्वेतों के बीच भाईचारे को बढ़ाने में क्रिकेट माध्यम बन सका तो इसका श्रेय वॉरेल को दिया जाना चाहिए।

उजाले की ओर

अपने कप्तान के इस ख्याल को वेस्टइंडीज के दो खिलाड़ियों कोनार्ड हुंटे और वेसली हाल ने आगे बढ़ाया। उन्होंने रेडियो-टेलीविज़न पर कई इंटरव्यू दिए। एक रेडियो कार्यक्रम में उन्होंने गुलामों पर हुए अत्याचारों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि वेस्टइंडीज़ के द्वीपों में तीसरी पीढ़ी के गुलामों ने अन्ततः कैसे आज़ादी पाई। कैसे दुनिया भाग्यशाली रही कि उसे दक्षिण अफ्रीका में नेलसन मंडेला, अमरीका में मार्टिन लूथर किंग और भारत में महात्मा गांधी जैसी महान हस्तियाँ मिलीं। ऑस्ट्रेलिया के घर-घर में इस कार्यक्रम को सुना गया। इस अश्वेत व्यक्ति की साफगोई और सादगी ने गोरी चमड़ी वाले ऑस्ट्रेलियाइयों को सिखाया कि चमड़ी का रंग कुछ भी हो, दिल साफ होना चाहिए।

दूसरा टेस्ट मैच

दूसरा टेस्ट मैच 30 दिसम्बर 1960 को मेलबोर्न में शुरू हुआ। दूसरे टेस्ट के पहले दिन 75 हज़ार दर्शक स्टेडियम के गेट पर धक्कामुक्की कर रहे थे। क्या टाई की वजह से अचानक दूसरे टेस्ट मैच के लिए इतनी दिलचस्पी पैदा हो गई थी? दरअसल, वेस्टइंडीज़ का खेल उनके लिए ताज़ी हवा के झोंके जैसा था। उन्हें "खेल भावना" का मतलब और महत्व नए सिरे से समझ में आ चुका था। हर हाल में अपनी टीम की केवल जीत देखने की इच्छा रखने वाले लोग अब चाहते थे कि उनकी टीम साफ-सुथरा खेल खेले। एक बहुत ही दुर्लभ घटना वेस्टइंडीज की पहली पारी में घटित हुई। सिम्पसन की टॉप स्पिन को पर खेलने के प्रयास में जोए सोलोमन की टोपी सिर से फिसलकर स्टम्प पर गिर गई।

तकनीकी तौर पर वे आउट थे। लेकिन यह केवल हादसा था। बेनो ने लेग अम्पायर से अपील की, जिसने शुरुआती हिचक के बाद सोलोमन को हिट विकेट करार दिया। इस निर्णय पर न केवल स्टेडियम में बैठे दर्शकों, बल्कि रेडियो पर कमेंट्री सुन रहे क्रिकेट प्रेमियों ने भी तत्काल तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की। बेनो की उनके ही देशवासियों ने खूब लानत-मलामत की। स्टेडियम में लोगों ने सोलोमन को वापस बुलाने की ज़ोरदार माँग की। सभी का मानना था कि बेनो को अपनी अपील वापस ले लेनी चाहिए या बल्लेबाज़ को वापस बुलाने के लिए उन्हें कम से कम अम्पायरों से तो चर्चा करनी ही चाहिए। खेल खत्म होने और खिलाड़ियों के ड्रेसिंग रूम में जाने तक दर्शक लगातार बेनो के खिलाफ प्रदर्शन करते रहे।

यह घटना अगले दिन अखबारों की सुर्खी बनी। इस हरकत पर प्रेस में बेनो की भारी आचोलना हुई।

वेस्टइंडीज़ टीम मेलबोर्न टेस्ट सात विकेट से हार गई। लेकिन सिडनी में खेला गया तीसरा टेस्ट उसने 222 रनों से जीतकर सीरिज़ को बराबरी पर ला दिया। इसलिए अन्तिम मैच ने पूरी दुनिया की दिलचस्पी जगा दी थी। ऑस्ट्रेलिया में कई औद्योगिक घरानों और कम्पनियों ने पाँच दिन के अवकाश की घोषणा की ताकि उनके कर्मचारी मैच देख सकें। राजधानी कैनबरा में ऑस्ट्रेलिया की संसद के सदस्यों ने श्वेत ऑस्ट्रेलिया नीति को खत्म करके एक राष्ट्र के रूप में मानवीय नज़रिया अपनाने की अपील की। वेस्टइंडीज़ के द्वीपों पर बनाए गए एलबमों की बिक्री चरम पर थी। थिएटरों में इन द्वीपों पर डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई। गिरजाघरों के धर्मोपदेशों में हुंटे और वेसली की बातें दोहराई गईं।

चौथा और अन्तिम टेस्ट

अन्तिम टेस्ट के पहले ही दिन 90,800 दर्शक स्टेडियम में पहुँचे और 48,749 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर के टिकटों की बिक्री हुई। उस समय ये दोनों ही विश्व रिकॉर्ड थे। यह भी निर्णय लिया गया कि हार-जीत का फैसला निकालने के लिए ज़रूरत पड़ने पर मैच को छठे दिन तक बढ़ा दिया जाएगा। जहाँ तक ऑस्ट्रेलियाई दर्शकों का सवाल था, वे चाहते थे कि कड़े मुकाबले में कोई न कोई टीम ज़रूर जीते। कौन-सी टीम जीते, यह बात अब उनके लिए ज़्यादा मायने नहीं रखती थी।

इस बार ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने खेल भावना का प्रदर्शन किया। मैच के आखिरी चरण में ऑस्ट्रेलिया को जीत के लिए चार रनों की ज़रूरत थी और तीन विकेट हाथ में थे। तेज़ गेंदबाज़ फ्रैंक मिशन की खराब सेहत के कारण उनका मैदान में उतरना पक्का नहीं था। इसलिए व्यावहारिक तौर पर ऑस्ट्रेलिया के पास केवल दो ही विकेट बचे थे। सातवें विकेट के बाद वाली ग्राउट बल्लेबाज़ी करने मैदान में उतरे। जैसे ही उन्होंने अल्फ वैलेंटाइन की गेंद को खेला, बेल्स नीचे गिर गए। लेकिन इस पर किसी का ध्यान नहीं गया। इस बीच ग्राउट ने दो रन पूरे कर लिए थे। बाद में विकेटकीपर ने अपील भी की। लेकिन देरी की वजह से अम्पायर ने उसे ठुकरा दिया। ग्राउट को खेलते समय लगा तो था जैसे उनके बल्ले से कोई चीज़ टकराई हो।

वेसली हाल इसके बाद भी कई बार ऑस्ट्रेलिया गए। भाईचारे पर बहुत-से भाषण दिए। कोनार्ड हुंटे ने अपने जीवन में गांधीवादी दर्शन को अपना लिया।

लेकिन किया कुछ नहीं जा सका, क्योंकि तब तक वे अगली गेंद खेल चुके थे। अगली ही गेंद पर ग्राउट ने पास खड़े क्षेत्ररक्षक कॉली स्मिथ को बहुत ही आसान कैच थमाकर एक तरह से अपना विकेट फेंक दिया। जब वे पवेलियन लौट रहे थे, तो लोग ताली बजाकर उनका अभिनन्दन करते रहे जब तक वे ड्रेसिंग रूम में नहीं चले गए। लेकिन उस गेंद पर उन्होंने जो दो रन लिए थे, उसे वापस तो नहीं लिया ला सकता था! और शायद यही रन वेस्टइंडीज़ की हार की वजह बने। इस तरह वेस्टइंडीज़ श्रृंखला भी हार गई। अगले दिन एक प्रमुख अखबार में सुर्खी थी : वे श्रृंखला हार गए, लेकिन ऑस्ट्रेलिया को जीत गए।

द फ्रैंक वॉरेल ट्रॉफी

यह बात सौ फीसदी सच थी। वेस्टइंडीज़ के खिलाड़ियों ने अपने व्यवहार से ऑस्ट्रेलियाइयों पर विजय पाई और उनके दिलों में हमेशा-हमेशा के लिए जगह बना ली। इसका अधिकतम श्रेय वेस्टइंडीज़ के कप्तान फ्रैंक वॉरेल को जाता है। ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडीज़ के बीच सम्बन्धों मउनके योगदान को सम्मान देते हुए ऑस्ट्रेलियन बोर्ड ऑफ कंट्रोल ऑफ क्रिकेट ने उनके नाम पर एक ट्रॉफी शुरू की – द फ्रैंक वॉरेल ट्रॉफी। इसकी घोषणा स्वयं बोर्ड के चेयरमैन सर डोनाल्ड ब्रैडमैन ने मेहमान टीम के स्वागत में आयोजित एक भोज समारोह में की। किसी भी खेल के इतिहास में शायद पहला बार एक जीवित खिलाड़ी के नाम पर ट्रॉफी शुरू की गई।

क्रिकेट के परे हुए बदलाव

टेस्ट श्रृंखला खत्म हो चुकी थी। अब समय मेहमानों की विदाई का था। उन्हें मेलबोर्न शहर की सड़कों पर से खुली कारों के कारवाँ में टाउन हॉल ले जाया गया। वहाँ मेयर अपने सम्मानित अतिथियों की अगवानी के इन्तज़ार में थे। सड़कों के किनारे लगभग पाँच लाख लोग जमा थे। लोग उन्हें करतल ध्वनि के साथ विदाई दे रहे थे। कई आँखों में आँसू थे।

इस श्रृंखला ने न केवल क्रिकेट में, बल्कि क्रिकेट के परे भी ऐसे बदलाव ला दिए जिनकी अर्से से ज़रूरत महसूस की जा रही थी। ऑस्ट्रेलिया ने श्वेत ऑस्ट्रेलियाई नीति का त्याग कर दिया। इस नीति के तहत केवल श्वेत लोगों को ही ऑस्ट्रेलिया में बसने की अनुमति थी।